दुष्यंत कुमार

कवि दुष्यंत का जन्म 01 सितंबर, 1933 में उत्तर प्रदेश के बिजनौर जिले के नवादा गांव में हुआ था | एक स्थान पर उन्होंने कहा है, 'गज़ल मुझ पर नाज़िल नहीं हुई है | मैं पच्चीस वर्षों से इसे सुनता और पसंद करता आया हूं...लेकिन गज़ल लिखने या कहने के पीछे एक जिज्ञासा अक्सर मुझे तंग करती है और वह है और वह है भारतीय कवियों में सबसे प्रखर अनुभूति के कवि मिर्जा गालिब ने अपनी पीड़ा की अभिव्यक्ति के लिए गज़ल का माध्यम ही चुना ? अगर गज़ल के माध्यम से मिर्जा गालिब अपनी तकलीफ को इतना सार्वजनिक बना सकते हैं, तो मेरी दुहरी तकलीफ (जो व्यक्तिगत भी है और सामाजिक भी) इस माध्यम के सहारे एक अपेक्षाकृत व्यापक पाठक वर्ग तक क्यों नहीं पहुंच सकती ?' वे सर्जनात्मक कौशल और पौरुष में विश्वास रखते थे | उन्होंने लिखा है -

कैसे आकाश में सुराख हो नहीं सकता |
एक पत्थर तो तबीयत से उछालो यारो |

दुष्यंत के बारे में निदा फाजली ने लिखा है, 'दुष्यंत की नजर उनके युग की नई पीढ़ी के गुस्से और नाराजगी से सजी-बनी है | यह गुस्सा और नाराजगी उस अन्याय और राजनीति के कुकर्मों के खिलाफ नए तेवरों की आवाज थी, जो समाज में मध्यवर्गीय झूठेपन की जगह पिछड़े वर्ग की मेहनत और दया की नुमानंदगी करती है |'

उनकी रचनाएं हैं -

एक कंठ विषपायी (काव्य नाटक), और मसीहा मर गया (नाटक), सूर्य का स्वागत, आवाजों के घेरे, जलते हुए वन का बसंत, छोटे-छोटे सवाल आंगन में एक वृक्ष, दुहरी जिंदगी, कघु कथाएं (उपन्यास), मन के कोण (लघुकथाएं), साये में धूप (गज़ल) |

42 वर्ष की आयु में 30 दिसंबर, 1975 को उनका देहांत हुआ |